

शीतला शीतला कहिके

शीतला शीतला कहिके, तोलामनावं वो,
आगे असाढ़ के महिना, चोला जुड़ावं वो,
कारज मोरो सादे....तोर भरोसा हावं वो,
आगे असाढ़ के महिना, चोला जुड़ावं वो.....

जब-जब आंखी मुदौं, दरस तोर पाथौं वो,
हिरदे मा भगति उमचथे, रहि-रहि सोरियार्थें वो,
गुनत रथौं तोरे गुन ला, अतकेच सहंराधं वो,
बुड़े रहीं तोरे भजन मा, कहिके गोहरार्थें वो,
दसो अंगरी बिनती हे...तोही ला सुनावं वो,
आगे असाढ़ के महिना, चोला जुड़ावं वो.....

महिना असाढ़ मा कहिथे, शीतला ला मनाले वो,
पबरित धरम गंगा मा, बुड़की लगाले वो,
भागमानी काया मिले हे, यहु ला फरियाले,
सातो पुरखा के भाग ला, उंचहा बनाले वो,
परन करे हंव ढाई...तोर अंचरा पाव्ं व को,
आगे असाढ़ के महिना, चोला जुड़ावं वो.....

दिन बादर देखके सुध्घर, जोखवा ला मढ़ायें वो,
शीतला जुड़वास करे के, उदिम ला रचायें वो,
गाँव के सगरो देवता ला, नेवता भेजायें वो,
पुरखा के चलाये चलन मा, आस ला लमायें वो,
इन आवय कोनो अलहन...चाउंर बंधावं वो,
आगे असाढ़ के महिना, चोला जुड़ावं वो.....

चौखडिया चउ पुराके, पिदुलीरखायें वो,
आवौ-आवौ बइठव मइया, आसन लगायें वो,
कांसा के कलसा सजाके, दियना जलायें वो,
गंगाजल अचमन करके, बरत ला उचायें वो,
तीन रंग के धजा हे...लहर लहरावं वो,
आगे असाढ़ के महिना, चोला जुड़ावं वो.....

कांचा-कोंवर हरदी पीसके, तीली तेल मिलायें वो,
तन भर तब शीतला ढाई के, मन भर चुपरायें वो,
नवा बस्तर पहिराके, अंगा-अंग ला सजायें वो,
पूजा के नरियर भेला, सरथाले चढ़ायें वो,
लीमडारा के सुध्घर... में चंवर डोलायें वो,
आगे असाढ़ के महिना, चोला जुड़ावं वो.....

कलिजुगिहा जीव के परन हे, सेवा बर दाई के,
कांचा पाका जुड़-जुड़ जेवन, भोग महामाई के,

पोरसाये हावय सथरा, लीमहिन बिमलाई के,
पावौ परसादी जननी, मया बढहाई के,
भूल चूक छमा करबे... घेरी-बेरी गोहरावंव वो,
आगे असाढ़ के महिना, चोला जुड़ावंव वो.....

तोरे किरपा ले जगत के, चलथे जिनगानी वो,
काया ला शीतल करदे, बसदि पानी वो,
अनहर उपजही तभे वो, होही ज़ किसानी वो,
पेट के भूख हा मिटही, पाही सुख परानी वो,
उड़ान- गौतम अरज लगाये.. इंहिचे थिरियावंव वो,
आगे असाढ़ के महिना, चोला जुड़ावंव वो.....

<https://bhajanganga.com/bhajan/lyrics/id/27909/title/shitla-shitla-kahike>

अपने Android मोबाइल पर [BhajanGanga](#) App डाउनलोड करें और भजनों का आनंद ले |